"देश के भीतर पनपने वाला आतंकवाद ज्यादा खतरनाक"

– आचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूं, 25 सितम्बर, 2009।

राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि पाकिस्तान आदि देशों के द्वारा फैलाये जाने वाले आतंकवाद से निपटना कठिन नहीं है। उस आतंकवाद से निपटना कठिन है जो देश के भीतर पनप रहा है। कुछ लोग ऐसे हैं जो भूखे लोगों को आतंकवादी, नक्सलवादी बना रहे हैं। जब तक राजनैतिक लोग रोटी की समस्याओं का हल नहीं खोजेंगे तो जो भूखे लोग आतंकवादी बन रहे हैं वे देश के लिए ज्यादा खतरा बन जायेंगे।

आचार्य महाप्रज्ञ जैन विश्व भारती में एक टीवी चैनल को दिये साक्षात्कार में कहा कि मीडिया जगत आर्थिक आकड़ों को प्रस्तुत करता है कि कमाई में कौन सबसे ऊपर है यह सर्वे कराया जाता है पर देश में जो भूख से तड़फ रहे हैं उनके आकड़ों की तरफ कोई ध्यान नहीं देता।

आचार्यश्री ने क्या राजनितिक लोगों से आप संतुष्ट हैं? के प्रश्न पर कहा कि मैं संतुष्ट हूं या नहीं यह नहीं कह सकता, पर जो राजनेता भूख की समस्या पर चिंतन नहीं करता वह सफल नहीं हो सकता। केवल अधिक विकास के मापदण्ड में विदेशी मुद्रा भण्डार और बड़े कारखानों को देखने से विकास नहीं कहला सकता। देश का विकास तभी होगा जब कोई भी आदमी भूखा नहीं सोयेगा।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि आर्थिक मंदी की समस्या से अणुव्रत के द्वारा निजात पाई जा सकती है। अणुव्रत का उद्घोष है "संयमः खलु जीवनम" जब व्यक्तिगत उपभोग का संयम होगा तब स्वयं ही मंदी का समाधान हो जायेगा। आचार्यप्रवर ने विदेश राज्यमंत्री शशी थरूर के "कैटल क्लास" टिप्पणी पर पूछे गये प्रश्न के सन्दर्भ धनवान की सोच अलग होती है इतना कहकर कोई भी टिप्पणी करने से मना कर दिया। वर्तमान साधु–समाज के भटकने के संदर्भ में पूछे गये प्रश्न के जवाब में आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि जब तक साधु पैसों एवं स्त्री से दूरी नहीं रखेगा तब तक न भटकना ऐसा कहना कठिन है। साधु को कंचन और कामनी का त्यागी होना चाहिए। पर वर्तमान में पैसों के द्वारा ही साधु के बड़प्पन को नापा जा रहा है।